SYNOPSIS

शोध–प्रारूप का शीर्षक

राष्ट्र के पुर्नउत्थान में दर्शन की भूमिका : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय

कामेश्वरनगर, दरभंगा–846004

के

स्नातकोत्तर दर्शनशास्त्र विभाग (मानविकी संकाय)

में

पी–एच0डी0 शोध हेतु प्रस्तावित

शोध प्रारूप

2023

शोध पर्यवेक्षक

डॉ0 राजीव कुमार,
एसोसिएट प्रोफेसर,
स्नातकोत्तर दर्शनशास्त्र विभाग,
ल0ना0मिथिला विश्वविद्यालय,
कामेश्वरनगर, दरभंगा

शोधार्थी

शिव शक्ति सिंह

राष्ट्र के पुर्नउत्थान में दर्शन की भूमिका : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

भूमिका :–

प्रारंभिक जिसे हम आदिस युग कहते हैं, उस युग से लेकर वर्तमान तक मानव का इतिहास निरंतर संघर्ष का इतिहास रहा है। असभ्य से सभ्य होने के संघर्ष में मानव की बुद्धि कभी रचनात्मक रही है, प्रयोगात्मक रही है और कभी वैज्ञानिक दृष्टि के साथ विकसित होने की संकल्पना रही है। परंतु मानव में बुद्धि के साथ–साथ पाश्विक प्रवृति भी है। पाश्विक प्रवृति के कारण मानव अशांति की परिस्थितियों में जीवित रहने के लिए मजबूर हो जाता है। शांति प्राप्ति करने के लिए हमें पुनः भारतीय राष्ट्र का अनुसरण करके सदाचार मूलक जीवन की प्राप्ति कर सकते है। क्योंकि विश्व की सर्वोत्कृष्ट संस्कृति भारतीय संस्कृति है, यह कोई गर्वोक्ति नहीं अपितु वास्तविकता है। भारतीय संस्कृति को देव संस्कृति कहकर सम्मानित किया गया है। वर्तमान में जब पूरी भारतीय संस्कृति पर पाश्चात्य सभ्यता का तेजी से आक्रमण हो रहा है, यह और भी अनिवार्य हो जाता है कि उसके हर पहलू को जो विज्ञान सम्मत भी है तथा हमारे दैनन्दिन जीवन पर प्रभाव डालने वाला भी है इस विषय को जनमानस के समक्ष प्रस्तुत करेंगे ताकि हमारी धरोहर–आर्य संस्कति के आधारभूत तत्व नष्ट न हो पायें। भारतीय राष्ट्र हमारी मानव जाति के विकास का उच्चतम स्तर कही जा सकती है। इसी की परिधि में सारे विश्व राष्ट्र के विकास के वसुधैव कुटुम्बकम् के सारे सूत्र आ जाते हैं। हमारे संस्कृति में जन्म के पूर्व से मृत्यु के पश्चात् तक मानवी चेतना को संस्कारित करने का क्रम निर्धारित है। मनुष्य में पशुता के संस्कार उभर न पाये, यह भारतीय संस्कृति का एक महत्वपूर्ण दायित्व है। भारतीय संस्कृति मानव के विकास का आध्यात्मिक आधार बनाती है और मानव में संत, सुधारक, शहीद की मनोभूमि विकसित कर उसे मनीषी, ऋषि, महामानव स्तर तक विकसित करने की जिम्मेदारी लेती है। सदा से ही भारतीय संस्कृति महापुरूषों को जन्म देती आयी है और यही हमारी सबसे बड़ी धरोहर है। भारतीय संस्कृति में दर्शन का महत्वपूर्ण स्थान है क्योंकि भारत में दर्शन को मानव व्यावहारिक जीवन से जोड़ के देखता है। आचारों और विचारों

का समन्वय ही संस्कृति है। इस दृष्टि से भारतीय संस्कृति की समग्रता की खोज करने के लिए विचार–साहित्य का अनुशीलन करना आवश्यक है। दर्शन इस विचार–साहित्य का आगार है। भारतीय संस्कृति की गहनता, गंभीरता, विशालता, स्थिरता और प्राचीनता आदि अनेक पहलूओं का सम्यक् विश्लेषण उसके दर्शन में निहित है। दर्शन इस देश की मौलिक एवं अजस्त्र चिंताधारा के उत्स हैं। यहाँ की संस्कृति की नींव उन्हीं पर आधारित है। भारतीय संस्कृति में आध्यात्मिक साधना का जो प्रभाव लक्षित होता है, उसका आधार भी यही तत्व–चिंतन है। षड् अस्तिक दर्शनों और लोकायतिक (चार्वाक) तथा जैन–बौद्ध आदि नास्तिक दर्शनों की समन्वितविचारधारा का निस्यन्द ही भारतीय संस्कृति है।

भारतीय संस्कृति को मनसा, वाचा और कर्मणा से अगर कोई भी मानव पालन करेंगे तो इससे उन्हें सूख का केन्द्र आंतरिक श्रेष्ठता, अपने साथ कड़ाई, औरों के प्रति उदारता, विश्वहित के लिए स्वार्थो का त्याग, पारस्परिक सहिष्णुता, परिवार और राष्ट्र के प्रति अपनी नैतिक जिम्मेदारी का परिपालन करने में सफल हो सकता है।

औचित्य :–

दार्शनिक चिंतन और प्रशिक्षण मूलतः मानव केंद्रित होता है। मानव की तार्किक परिभाषा के क्रम में कहा जाता है कि मानव एक विवेकशील प्राणी है। अर्थात् मानव में पाश्विक गुण भी है और मानव विवेकशील भी है। बुद्धि के आधार पर मानव उचित और अनुचित का भेद समझ सकता है। इस भेद के द्वारा ही मानव विवेक सम्पन्न हो सकता है अतएव दार्शनिक चिंतन का मूल उद्देश्य मानव को एक पशु से उपर उठकर सभ्य और सदाचार पूर्ण जीवन के लिए प्रेरणा देना होता है तथा दार्शनिक चिंतन के कारण एक प्रकार का मानसिक चिंतन भी मानव को होता है। इस प्रकार के चिंतन और प्रशिक्षण के कारण मानव को विवेक सम्पन्न होकर स्वयं भी और समाज में भी सभ्य जीवन की नींव डालता है। भारतीय संस्कृति के पुर्नउत्थान के द्वारा वर्तमान में जो भारतीय समाज में मानवता का ह्रास हो रहा है उससे मानव को उपर उठाया जा सकता है। अतः भारतीय राष्ट्र का विश्लेषण तथा अनुशीलन से समाज को एक नई दिशा प्राप्त होगा।

शोध का उद्देश्य :–

वर्तमान समय को उत्तर आधुनिक काल कहा जाता है। इस समय में भारतीय राष्ट्र आज अपना मूल स्वरूप खोती जा रही है। पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव के कारण यहाँ का संस्कृति दूषित हो गया है। जिससे यहाँ लोग त्याग–बलिदान, परमार्थ के आदर्श से हटकर स्वार्थ सिद्धि को अपना लिया है। भारत में भी अब खाओ, पीओ और मौज करो का आदर्श घर–घर में प्रवेश करता जा रहा है। जिससे कहीं–न–कहीं परिवार, समाज और राष्ट्र में अशांति फैल रहा है और मानव तनाव ग्रस्त होकर जीवन जीने के लिए विवश है। ऐसी परिस्थिति में दर्शन के द्वारा भारतीय संस्कृति को पुर्नउत्थान कर मनुष्य के जीवन को इस विचित्र संकट से मुक्त करने में समर्थ है। इसके पुर्नउत्थान से नैतिक मूल्य, सामाजिक मूल्य, आर्थिक मूल्य, राजनैतिक मूल्य आदि का स्थापना होगा और मानव के जीवन को नई दिशा मिलेगा। अतः इस शोध का उद्देश्य भारतीय संस्कृति के मूल रचना तथा मानव के व्यवहारिक प्रयोग के आधार पर एक समग्र मूल्य को विश्व के समक्ष उपस्थित करना है। इस शोध का सार्थकता भी इस प्रयास के सफल होने में ही है।

पूर्व कल्पना :–

भारतीय राष्ट्र के जीवन पद्धति के संदर्भ में यह प्रश्न स्वाभाविक रूप से उत्पन्न होता है कि आज के सूचना प्रौधोगिकी क्रांति के युग में प्रासंगिक है अथवा नहीं? पुनः यह भी संभावना व्यक्त की जाती है कि भौगोलीकरण तथा उदारिकरण के युग में भारत की संस्कृति यथाः–आचार–विचार तथा मूल्य बोध से मानव को कैसे लाभ मिलेगा। क्योंकि वर्तमान में भारत की सांस्कृतिक अवधारणा के आधार पुराने मान–मूल्यों के साक्ष्यों पर निर्धारित नहीं किये जा सकते हैं, क्योंकि इस दिशा की नयी खोजों ने उन्हें प्रायः प्रभावहीन सिद्ध कर दिया है। अतः ऐसी स्थिति में यह प्रश्न उठना स्वभाविक है कि आज मानव भारतीय संस्कृति के पारंपरिक मूल्यों को किस प्रकार आत्मसात कर सकता है? इसके अलावा वर्तमान युग अर्थ युग माना जा रहा है अर्थात् पारंपरिक मूल्यों के स्थान पर मनुष्य आर्थिक रूप से संपन्न होना चाह रहा है क्योंकि भोग विलास के कारण अनेक प्रकार की उपभोग करने वाली वस्तुओं का क्रय–विक्रय हो रहा है। अतः यह प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि भारतीय संस्कृति व्यवहारिक है अथवा नहीं?

अतएव भारतीय राष्ट्र के पुर्नउत्थान के विश्लेषण के क्रम में उपरोक्त प्रश्नों तथा पूरक प्रश्नों पर एक परिकल्पना अथवा पूर्व कल्पना यह व्यक्त की जा सकती है कि हालात कैसा भी हो, फिर भी मानव यदि वास्तव में पाश्विक प्रवृत्ति से उपर उठकर एक विवेकशील मानव बनना चाहता है, एक नैतिक मूल्यों से संदर्भित जीवन व्यतीत करना चाहता है तथा भारत के मानव होने के कारण अपने उत्तरदायित्व का निर्वाह करना चाहता है तो इसके लिए उन्हें भारतीय संस्कृति का अनुसरण करके ही पार्थय हो सकता है।

केन्द्र बिन्दु :–

दर्शन भारतीय राष्ट्र का समग्र दर्शन है इसमें अध्यात्म तथा मूल्यबोध पर आधारित जीवन–शैली भारतीय संस्कृति का केन्द्र–बिन्दु है। भारतीय संस्कृति नैतिक मूल्यों पर आधारित है और सदाचार मूलक दर्शन एवं आर्थिकम दर्शन तथा समाज दर्शन पर गंभीरतापूर्वक चिंतन किया है। अतः भारतीय संस्कृति दर्शन में विविधताएँ है। प्रस्तुत शोध भारतीय संस्कृति का पुर्न उत्थान के द्वारा समाज में सदाचार मूलक जीवन पद्धति का अन्वेषण तथा विश्लेषण है। अतः प्रस्तुत शोध कार्य के केंद्र में भारतीय संस्कृति जीवन के समान ही बहुपक्षीय है। इसमें मानव के बौद्धिक और समाजिक पक्ष सम्मिलित है। यह मनुष्य की आध्यात्मिक भावनाओं को दर्शाता है। संस्कृति के पुर्नउत्थान के विश्लेषण के क्रम में भारत के विभिन्न संस्कृति विचारों पर भी प्रकाश दिया जाएगा।

पूर्व अध्ययन :–

भारतीय राष्ट्र के पुर्नउत्थान पर दर्शन में अनेक शोध कार्य किए गये है। राष्ट्रीय जगत के अनेक ख्यातिलब्ध विद्वानों ने भारतीय संस्कृति के पुर्नउत्थान पर शोध कार्य के द्वारा ज्ञान में वृद्धि की है। इस शोध कार्य करने से पूर्व अनेकों संस्कृति एवं धर्म के पुस्तक को अध्ययन कर कार्य किया जाएगा। अतः पूर्व अध्ययन के क्रम में वाल्मीकि के रामायण, व्यास के महाभारत एवं दिनकर के संस्कृत के चार अध्याय पुस्तकों का तथा उसके लेखकों का उल्लेख किया जा सकता है।

शोध पद्धति :–

प्रस्तुत शोध प्रबंधन मानविकी से संबंधित है। अतएव इस शोध कार्य में विवरणात्मक पद्धति, विश्लेषणात्मक पद्धति, तुलनात्मक पद्धति तथा समीक्षात्मक पद्धति के द्वारा मौलिक उद्भावनाओं के अनवेषण करने की योजना है। भारत में विभिन्न स्थानों पर जाकर अनेकों संस्कृति के द्वारा तथ्यों का संकलन किया जाएगा तथा उन संस्कृति संकलन के आधार पर भारतीय संस्कृति के पुर्नउत्थान पर दर्शन के द्वारा विश्लेषण किया जाएगा।

कार्य योजना :–

प्रस्तुत शोध प्रबंध में छः अध्याय होगा। तात्पर्य यह है कि इस शोध प्रबंध को छः अध्यायों में विभक्त किया जायेगा जो इस प्रकार है :–

प्रथम अध्याय :– राष्ट्र की दार्शनिक पृष्ठभूमि एवं मान्यताएँ

दूसरा अध्याय :– संस्कृति का समाजिक पक्ष

तीसरा अध्याय :– हिन्दू संस्कृति

चौथा अध्याय :– वेदयुगीन संस्कृति

पाँचवा अध्याय :– पुराणों एवं महाकाव्यों में संस्कृति

छठा अध्याय :– उपसंहार

संदर्भ ग्रंथों की सूची :–

1. रामायण – वाल्मीकि
2. संस्कृत के चार अध्याय – रामधारी सिंह दिनकर
3. राष्ट्र और कला – वाचस्पति गैरोल
4. राष्ट्र के आधारभूत तत्व – पं0 श्रीराम शर्मा आचार्य
5. वेद का चारो भाग
6. मानव और संस्कृति – दुबे, श्यामचरण
7. संस्कृति का दार्शनिक विवेचन – देवराज

उपरोक्त पुस्तक के अतिरिक्त विभन्न शोध पत्रिकाओं, समाचार पत्र, अन्य पुस्तकों को भी शोध कार्य के दौरान सम्मिलित किया जाएगा।